ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-३
दिनांक-शुक्रवार,१० जनवरी,२०२०

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः १९.६ एवं १०.९ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ९२ प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ७८ प्रतिशत, हवा की औसत गति ४.१ कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण ०.५ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ०.१ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में १४.७ एवं दोपहर में २०.० डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में १.८ मि०मी० वर्षा रिकार्ड हुई। रात्री एवं सुबह में कुहासा देखा गया।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(११-१५ जनवरी,२०२०)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी ११-१५ जनवरी,२०२० तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल छा सकते हैं तथा इस अवधि में आमतौर पर मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान १७ से १९ डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान ८ से १० डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। अगले ३ दिनों में हल्का तेज पछिया हवा चलने के कारण ठंढ़ में वृद्धि हो सकती है। ११ जनवरी को अगले २४ घंटों तक कोल्ड-डे की स्थिति बनी रह सकती है।
- अगले ३ दिनों में पछिया हवा तथा उसके बाद पूरवा हवा चलने की संभावना है। इस दौरान हवा की रफ्तार औसतन ५ से १० कि०मी० प्रति घंटा रह सकती है। रात्री एवं सुबह में हल्के से मध्यम कुहासे छा सकते हैं।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ९० से ९५ प्रतिशत तथा दोपहर में ७० से ७५ प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- मक्का की फसल में तना छेदक कीट की निगरानी करें। इसकी सूंडिया कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर तने में पहुँच जाती है। तने के गुद्दे को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। जिससे मध्य कलिका मुरझायी नजर आती है जो बाद में सुख जाती है। एक ही पौधे में कई सूंडिया मिलकर पौधें को खाती है। इस प्रकार फसल को यह काफी नुकसान पहुचाती है। उपचार हेतु फोरेट १० जी० या कार्बोफ्यूरान ३ जी० का ७-८ दाना प्रति गाभा दें। अधिक नुकसान होने पर डेल्टामिथ्रिन २५०-३०० मि०ली० दवा ५०० से ६०० लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- पिछात गेहूँ में उगने वाले खरपतवार के नियंत्रन हेतु पहली सिंचाई के १० दिनों बाद अथवा बोआई के ३० से ३५ दिनों पर सल्फोसल्फयुरॉन ३३ ग्राम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन २० ग्राम प्रति हेक्टर दवा ५०० लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में छिड़काव करें। गेहूँ के साथ यदि सरसों, सुर्यमुक्खी, मटर अथवा चौड़ी पत्तियो वाले फसल बोयी गई हो तो इन दवाओ का छिड़काव नहीं करें। समय से बोयी गयी गेहूँ की फसल जो ४० से ५० दिनों की हो गई है, उसमें दूसरी सिंचाई करें।
- आलू में १०-१५ दिनों के अन्तराल में सिंचाई करें। कटवर्म या कजरा पिल्लू कीट का प्रकोप फसल में दिखनें पर बचाव के लिए क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० दवा का २.५ से ३ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। झुलसा रोग की नियमित रुप से निगरानी करें।
- सब्जियों में निकाई-गुड़ाई एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। पिछात फूलगोभी/बन्दगोभी में डायमंड बैक मॉथ कीट की निगरानी करें। यह कीट सलेटी भुरे रंग का पिल्लू होता है, जिसके शरीर पर छोटे-छोटे बाल होते है। इसके पिल्लू पत्तियों का खाकर उसमें छोटे-छोटे छेद बना देते है। पौधे की वृद्धि रुक जाती है,फलस्वरुप पौधो पर शीर्ष छोटा बनता है तथा फसल की काफी हानि होती है। बचाव हेतु प्रकाश प्रपंच लगावे। यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पेनोसेड १ मी०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मिर्च की फसल में थ्रिप्स कीट की निगरानी करे। इसके शिशु/वयस्क कीट सैकड़ो की संख्या में पौधो की पत्तियो की निचली सतह पर छिपे रहते हैं और कभी-कभी उपरी सतह पर भी देखे जा सकते हैं। ये पत्तियो, कलियो व फूलो का रस चुसते है। यह कीट मिर्च में बांझी विषाणु रोग फैलाता है। इससे बचाव हेतु इमिडक्लोप्रीड १७.८ ई०सी० का १ मी०ली० या डायमेथोएट ३० ई०सी० का २ मि०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करे।
- सरसों की फसल में लाही कीट की नियमित रुप से निगरानी करे। यह सुक्ष्म आकार का कीट पौधो के सभी मुलायम भागो-तने व फलीयों का रस चुसते है। ये कीट मधु-स्त्राव निकालते है, जिससे पौधे पर फंगस का आक्रमण हो जाता है तथा जगह-जगह काले धब्बे दिखाई देते हैं। ग्रसित पौधों में शाखाएँ कम लगती हैं। पौधे की बढ़वार रुक जाती है। पौधे पीले पड़कर सुखने लगते है। फलीयॉ कम लगती है तथा तेल की मात्रा में भी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए डाईमेथोएट ३० ई०सी० दवा का १.० मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- चने की फसल में सूंडी कीट की निगरानी करें। यह कीट चने की फलियों में छेद करके अन्दर प्रवेश कर जाती है और दानों को खाकर खोखला कर देती है, जिससे उपज में काफी कमी आती है। यह कीट दिन में भी पौधे में लगी फलियों में आधी घुसी हुई और आधी लटकी हुई देखा जा सकता है। इससे बचाव हेतु खेतो के पास प्रकाश प्रपंच लगाकर प्रौढ़ कीटो को आकर्षित कर तथा नष्ट कर इसकी संतति को कम किया जा सकता है। फिरोमोन प्रपंश @ ३-४ प्रपंस प्रति एकड़ की दर से लगायें। यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पेनोसेड १ मी०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मटर की फसल में चूर्णिल फफूँदी (पाउडरी मिल्डयु) रोग की निगरानी करें। इस रोग में पत्तीयों, फलों एवं तनों पर सफेद चूर्ण दिखाई पड़ती है। इस रोग से वचाव के लिए फसल में कैराथेन दवा का १.० मिलीलीटर प्रति लीटर पानी अथवा सल्फेक्स दवा का ३ ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। मटर में नियमित रुप से फली छेदक कीट की निगराणी करें।

आज का अधिकतम तापमानः १७.५ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ५.२ डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः १२.४ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ४.२ डिग्री अधिक

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकार